RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

छत्तीसगढ़ के जिले–गरियाबंद में कमार जनजाति द्वारा बांस कला से कलाकृति निर्माण का अध्ययन

[1]डॉ. शिप्रा बैनर्जी, [2]श्रीमती ऋचा ठाकुर

[1]सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग, शास.दु.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2]शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, शास.दु.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 July 2019

Keywords
बांसकला, जिला–गरियाबंद, कमार जनजाति

***Corresponding Author**
Email: thakurricha80[at]gmail.com

ABSTRACT

बांस कला छत्तीसगढ़ की एक पारंपरिक कला है, बांस कला छत्तीसगढ़ की कई जिलों में शिल्पकारों द्वारा बनाई जाती है। बांस से बनी शिल्प इको–फ्रेंडली होते है। जिसे छत्तीसगढ़ में बस्तर, कांकेर, गरियाबंद, सरगुजा जिलों में बनाया जाता है। बांस कला द्वारा टोकरी, गुड़िया, चलनी, चटाई, डलिया, आभुषण, चुड़ि, ब्रश होल्डर, लेटर होल्डर व अन्य वस्तुएँ बनाई जाती है। छत्तीसगढ़ के जिला–गरियाबंद में मुख्यतः कमार जनजाति द्वारा बांस कला का कार्य कई पीढीयों से किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में जिला–गरियाबंद के कमार जनजातियों के द्वारा बनाए गए बांस शिल्प का अध्ययन किया गया है। जिसमें कमार जनजाति के युवा छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प बोर्ड के सेंटर द्वारा दी गयी प्रशिक्षण से बांस के मनमोहक कलाकृति, फर्नीचर व वस्तुएँ बना रहे है। जिससे रोजगार भी बड़ रहा है और बांस कला का संरक्षण व लोकप्रियता भी बड़ रही है।

परिचय –

प्रत्यके क्षेत्र के हस्त कला में उस क्षेत्र की लोक संस्कृति झलकती है। हस्त कला की तकनीक प्रायः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होती जाती है। परिवार के बच्चे अपने घर के बड़ें–बुढों को जो कुछ बनाते देखते है, बचपन से वे उसका ही अनुसरण करते हुए, अपने आप सीखते जाते है। बांस कला से बने हस्तशिल्प इको–फ्रेंडली होते है जो किसी भी प्रकार से हानि नहीं पहुँचाते है। बांस शिल्प को बनाने की विधि जटिल व दीर्धावधि का श्रम जुड़ा होता है। छत्तीसगढ़ के जिला–गरियाबंद, बस्तर, रायगढ़ और सरगुजा में बांस शिल्प के अनेक परंपरागत शिल्पकार है। गरियाबंद के कमार जनजाति के शिल्प कार बांस कला को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बडा रहे है। कमार जनजाति के युवा व अन्य लोग छत्तीसगढ़ हस्त शिल्प बोर्ड गरियाबंद द्वारा लगाए गए शिविर में बांस कला के आधुनिक कलाकृतियों व मांग के अनुसार उत्पाद बनाना सीखते है। जिसमें शिल्पकार प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात अपने द्वारा बनाए गए उत्पाद को छत्तीसगढ़ हस्त शिल्प सेंटर में दे देते है। छत्तीसगढ़ हस्त शिल्प बोर्ड के सेंटर में मांग के अनुसार शिल्पकारों से उत्पाद बनवाए जाते है। जिससे शिल्पकारों को उत्पाद बेचने की भी समस्या नहीं होती।

1•1छत्तीसगढ़ राज्य जिला गरियाबंद

छत्तीसगढ़ भारत का एक राज्य है। इसका गठन 01 नवंबर, 2000 को हुआ है और यह भारत का 26 वां राज्य है। पहले यह मध्य–प्रदेश के अंतर्गत था। छत्तीसगढ़ का नाम पहले दक्षिण कौशल था, जो छत्तीसगढ़ों को अपने में समाहित रखने के कारण छत्तीसगढ़ बना है। छत्तीसगढ़ राज्य गठन के समय यहॉ सिर्फ 16 जिले थे, व बाद में दो नए जिलों की घोषणा की गई जो कि नारायणपुर व बीजापुर थे। इसके बाद छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने 15 अगस्त 2011 को 09 नौ नए जिलें बनाने की घोषणा की जो 01 जनवरी 2012 से अस्तित्व में आ गए। इस तरह आप छत्तीसगढ में कुल 27 जिले है।

कांकेर,सुकमा, सरगुजा, कोरबा, जांजगीर–चापा, बीजा पुर, कोरिया, दंतेवाड़ा, बालोद, जशपुर, दुर्ग, बलरामपुर बस्तर, धमतरी, सुरजपुर, राजनांदगांव, बिलासपुर, मुंगेली, रायपुर, महासमुंद, बेमेतरा, नारायणपुर, रायगढ़ बलौदाबाजार, गरियाबंद, कोडांगांव।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

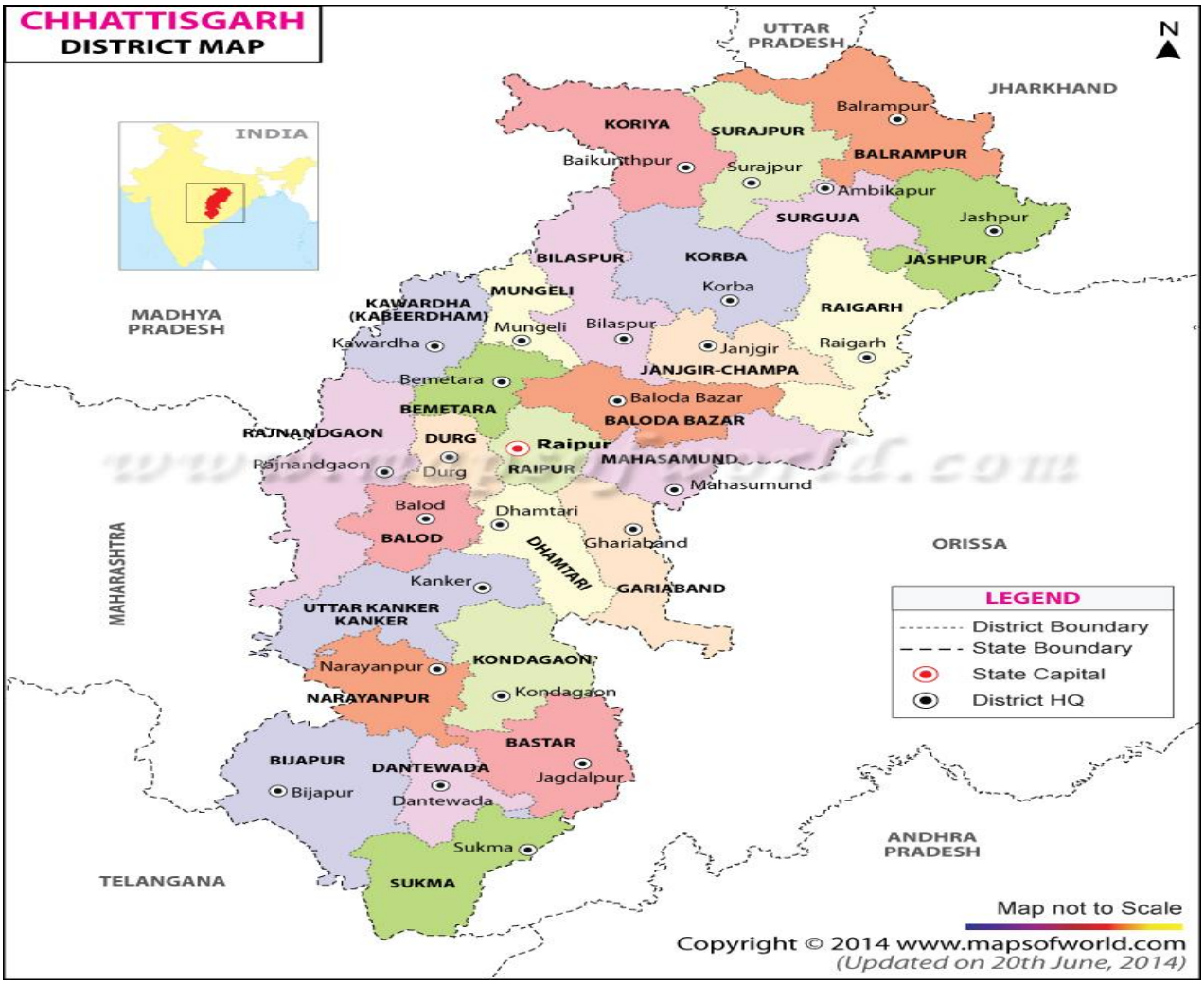

Image source : maps of world

1.2 इतिहास

छत्तीसगढ़ अपने जाने पहचाने मनमोहक व जटिल बांस कला के लिए जाना जाता है। छत्तीसगढ़ में मुख्यतः नारायणपुर, कोड़ागांव, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा, कांकेर, गरियाबंद, राजनांदगांव, बिलासपुर एवं जशपुर में हजारों परिवार बांस शिल्प का कार्य करते आ रहे है। गरियाबंद में कुचेना नामक गांव में कमार जनजाति के लोग बांस के कार्य के लिए विशेष प्रसिद्ध है जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को आगे बड़ा रहे है। बस्तर ने अपने कला को 05 हजार वर्षों से संजो कर रखा है व अभी भी नए नए उत्पाद द्वारा छत्तीसगढ़ के जिलों में हस्त शिल्प जीवित हैं

1.3 जनजाति –

गरियाबंद के कुचेना नामक गांवमें बांस कला का कार्य मुख्यतः कमार जनजातियों की पुस्तैनी कला है। जिसे परिवार के बुर्जूग सदस्य अगली पीढ़ी तक स्थानांतरित करते जा रहे है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ हस्त–शिल्प बोर्ड द्वारा चलाए जा रहे परियोजना से अन्य जनजाति के लोग भी इस कला को सीख रहे है।

1.4 छत्तीसगढ़ में बांस कला का कार्य करने वाले जिले व गांव–

बस्तर, सरगुजा में शिल्पग्राम (नायायणपुर) , डोंगरी गांव(गरियाबंद), कुचेना (गरियाबंद), बम्हनी (गरियाबंद), इसके अलावा प्रदेश के कोंडागांव, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा, कांकेर, राजनांदगांव, बिलासपुर एवं जशपुर में हजारों परिवार बांस शिल्प व्यवसाय पर आश्रित है। डोंगरीगांवगरियाबंद में छत्तीसगढ़ हस्त शिल्प बोर्ड द्वारा परियोजना प्रारंभ की गई। जिसमें युवाओं का अच्छा रूझान देखा गया। कुचेना गांवगरियाबंद में आज भी कमार जनजाति के सत्रह परिवार रहते है जिसमें सभी परिवार के सदस्य मिलकर बांस का कार्य करते है।

2) उद्देश्य –

1. वर्तमान में बांस कला से संबंधित जानकारी प्राप्त करना
2. बांस कला के शिल्पकारों द्वारा बांस कला में समय अनुसार लाए गए परिवर्तन का अध्ययन करना।
3. नए कलाकृतियों व पुराने कलाकृतियों की मांग का अध्ययन करना।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

3.) सीमाएँ – इस शोध पत्र में छत्तीसगढ़ के केवल गरियाबंद जिले के गॉवों को अध्ययन केलिए चुना गया है।

4.) शोध विधि

4.1 शोध प्ररचना –

प्रस्तुत शोध पत्र एक लोक कला के बारे में है, तथा इसके लिए विवरणात्मक शोध प्ररचना का उपयोग किया गया है। बांस कला को छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के कमार जनजाति द्वारा पारंपरिक कलाकृति बनाए जा रहे है व युवा शिल्पकारों द्वारा इस कला को नया रूप दिया जा रहा है। इसी बदलाव का अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया है।

4.2 क्षेत्र का चुनाव –

छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले का चयन किया गया है। गरियाबंद जिले का निर्माण 01 नवंबर 2012 को डॉ. रमन सिंह के द्वारा किया गया है। गरियाबंद जिले में चार ब्लॉक विकासखंड राजिम, गरियाबंद, मैनपुर, देवभाग है। गरियाबंद जिला महासमुंद लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आता है एवं गरियाबंद जिले में 02 विधानसभा क्षेत्र राजिम एवं बिन्दानवागढ़ है।

4.3 उपकरण व साधन –

यह अध्ययन गुणात्मक तथ्यों पर आधारित है, इसके लिए अवलोकन, क्षेत्र भ्रमण, अनुसूची आदि उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

4.4 तथ्यों का संकलन –

तथ्यों का संकलन करने हेतु हमने क्षेत्र भ्रमण, साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन, शोधपत्र, छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड के प्रकाशन, व वहां के अधिकारियों द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। हमने मुख्यतः गरियाबंद जिले में बांस कला के शिल्पकारों के निवास स्थान पर जाकर शिल्पकार्य को देखा व जानकारी एकत्रित की। छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड गरियाबंद द्वारा युवा शिल्पकारों को बांस कला के नए कलाकृतियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उसका अध्ययन किया गया।

5) विश्लेषण एवं परिणाम –

5.1 उम्र – 11 साल से लेकर 60–63 साल तक के कमार जनजाति के शिल्पकार कार्य कर रहे है।

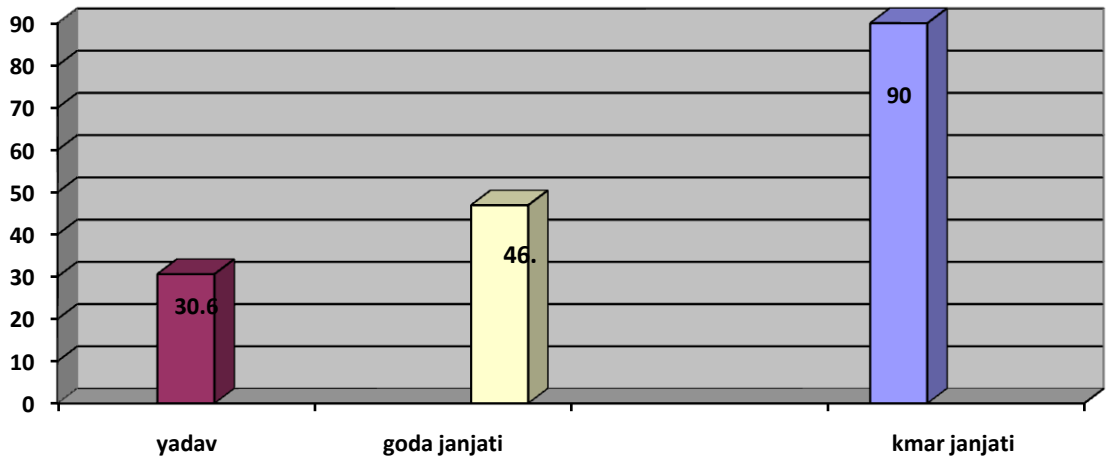

बांस कला के शिल्पकार गरियाबंद

5.2 कच्चा माल – कमार जनजाति के लोग कच्चा माल जैसेः– बांस आसपास के गांव व जंगलों से लेकर आते है व उससे बांस कला के कलाकृति बनाते है।

5.3 बांस शिल्प, औजार :–

ग्लैण्डर

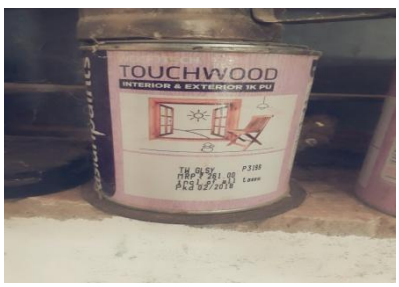

पॉलीश

पॉलीश

आरी

पटासी

बिधना

दांव

ब्लु लैम्प

दीमक की दवा

हथौड़ी

दांव पटासी

शिंकजा

5.5 कलाकृति – बांस कला द्वारा टुकना, झउहा, डलिया, झेझरी, लेटर बॉक्स, पेन स्टैण्ड, ब्रश होल्डर, बुक रेक, फर्नीचर, ज्वेलरी, व आवश्यकतानुसार अन्य कलाकृतियॉ बनाई जाती है।

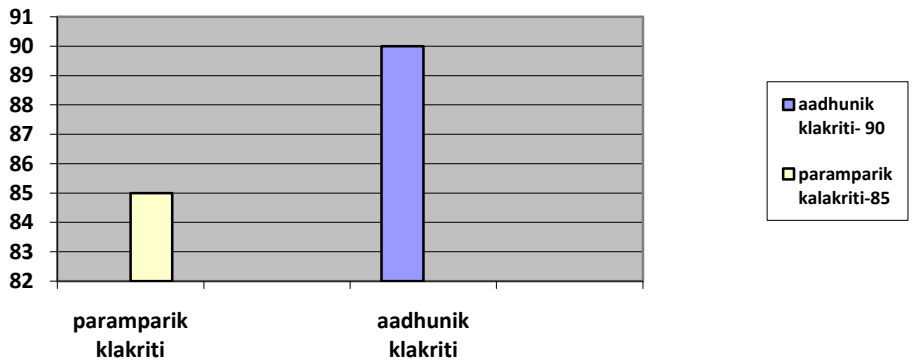

बांस कला के उत्पादों की मांग

5.6 विधि –

1. बांस को कांट कर व छिलकर कलाकृति के लिए बांस को तैयार किया जाता है।
2. अलग–अलग कलाकृति के लिए अलग–अलग मोटाई व लंबाई के बांस को लिया जाता है।
3. सबसे पहले एक विशेष प्रकार की छुरी ''कर्री'' से बांस की लंबी पट्टियां छीली जाती है। यह काम प्रायः घर के बुढ़े लोग बैठे–बैठे करते है। उसके बाद इन पट्टियों को पुनः छीलकर और पतला किया जाता है। इससे ''सुपा'', ''झांपी'' और ''हाथ पंख'' बनाए जाते है।
4. जो मोटी काड़ियां निकाली जाती है। उनसे ''टुकना, टुकनी, दौरी, चोंगरी, छितका, पर्रा '' आदि बनाया जाता है। इनका उपयोग अनाज रखने वनोपज

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संग्रहण में बाजार से विभिन्न वस्तुएँ लाने ले जाने के लिए किया जाता है। गोबर या मिट्टी से लीप कर बर्तन जैसी बनाई गई ''दौरी'' जो प्रायः अनाज रखने के काम आती है।

5. घी या अन्य वस्तुएँ ऊपर टॉग कर रखने के लिए ''छितका'' का उपयोग किया जाता है।
6. ''झांपी'' का उपयोग मुर्ग्रे रखने के लिए होता है।
7. मछली पकड़ने के लिए ''चोंगरी'' बनाई जाती है।
8. इन वस्तुओं को सुंदर बनाने के लिए इनकी कुछ पट्टियों और कड़ियों को लाल, पीला और हरें रंग में रंगा जाता है। रंग चढ़ाने के लिए रंग को पानी में घोल कर उबाला जाता है। उसमें इन पट्टियों और कड़ियों को दो–तीन घंटे डुबो कर रखा जाता है। रंगीन और सादी पट्टियों को क्रास करके डिजाइन बनाया जाता है।

झांपी

टुकना

दौरी

सुपा

छितका

Image Source https://ushaathaley.wordpress.com

छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा स्थापित छत्तीसगढ़ हस्त शिल्प बोर्ड द्वारा जिला गरियाबंद में चलाए जा रहे परियोजना के अंतर्गत शिल्प कारों को नई कलाकृति बनाने का प्रशिक्षण देने के उपरांत मांग के अनुसार हस्तशिल्प बोर्ड शिल्पकारों को उत्पाद बनाने को कहती है। जिसकी बिकरी समय–समय पर प्रदर्शिनी व मेले आयोजित कर इन उत्पादों की बिकरी की जाती है।

बांस कला के नए व पुराने रूप को छत्तीसगढ़ राज्य व राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष पहचान प्राप्त हुई है। कुछ कंपनीयॉ भी इस कला की ओर आकर्षित हुई है। जिससे कि उन स्थानों पर हस्तशिल्प बोर्ड उन उत्पादों को लेकर गए है। जैसे कि गोवा, केरल, रायपुर के छत्तीसगढ़ हाट, राजिम कुंभ मेला व राज्योत्सव में उत्पादों को प्रदर्शित व बिकरी की गई।

6 निष्कर्ष – गरियाबंद के कमार जनजाति बांस कला के कार्य को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बड़ा रहे है तथा समय व आधुनीकिकरण के अनुसार कलाकृति में परिवर्तन भी ला रहे है। जिससे बांस कला की लोकप्रियता बनी हुई है व पारंपरिक धरोहर भी सही सलामत है। जिससे इस कला को संरक्षण नवीनता एवं प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। भारत ही नहीं भारत के बाहर भी बांस कला को सराहा जा रहा है।

संदर्भ :–

1. छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड बुकलेट
2- https://www.patrika.com>gariaband
3- https://www.cgsamanyagyan.com
4- https://www.bhaskar.com>news